1. गुम्म भेल ठाढ़ छी - गोपेश
2. बलचनमा - यात्री

MAITHILI

# गुम्म भेल ठाढ़ छी



रचयिता

श्री गोपालजी झा 'गोपेश'




प्रकाशक

ठुट्ठा परिवार

काजीपुर, पटना-४

दाम — एक टाका मात्र

प्रकाशक
दृष्टा परिवान
पहिल लेप
काजीपुर, पटना–४



मुद्रक
आदर्श प्रेस
पटना–४

# आहेमाहे

अनुभूति हो वा अभिव्यक्ति मौलिकताक दावी केओ नहि कए सकैछ। कोनो स्तर पर नहि। जीवन मे की नव थिक आ की पुरान, तकरो निर्णय करब कठिन। सम्यक शिक्षा पर इतिहासो घसाइत घसाइत विलुप्त भए जाइछ। जानि नहि भिनुसर ओ साँझक आवर्त्तन मे कतेक प्रत्यावर्त्तन छैक। परन्तु एतेक धरि सत्य जे समयक पएर तर जे दबि गेल से 'पुरान' थीक आ' जकरा प्रतिकूल दबाते नहि बहए से 'नव'। एहि संग्रह मे युगधर्म ओ स्थानीय रंगक निखार कहाँ धरि उतरल अछि तकर निर्णय करबाक अधिकार अपनहि केँ अछि। हमर पहिल कविता-संग्रह 'सोनदाइक चिट्ठी' जहिआ बहराएल तहिआ मैथिली जगत मे ओकर रंग बिरंगक टिप्पणी भेल, तकर उल्लेख करब एतए प्रयोजनीय नहि बुझना जाइछ। मुदा, अपन पहिल संग्रह सँ हम पूर्ण सन्तुष्ट छलहुँ आ' पाठक लोकनि मे ओ ततेक लोकप्रिय सिद्ध भेल जे उत्साहित भऽ, कए आइ दोसरो संग्रह दए रहल छी।

आदरणीय प्रोफेसर श्री हरिमोहन झा जी केँ हम साहित्य-प्रणयनक क्षेत्र मे अपन दिशा-निर्देशक मनैत छिऐन्हि। तेँ हुनका सँ उऋण नहि भए सकैत छी। कविताक शब्द-योजना मे अपन गृहिणी श्रीमती प्रभावती झा, बी० ए० आनर्स सँ बहुत सुभाओ भेटल अछि। मुदा हुनका की धन्यवाद दिऐन्हि? आवरण शिल्पी श्री प्रशान्त केँ सेहो नहि बिसरि सकैत छिऐन्हि जे

एतेक कार्य व्यस्तता रहितहुँ पूर्ण तत्परता देखौने छथि । बन्धुवर श्री कैलाश प्रसाद सिंह (पटना हाईकोर्ट) तथा श्री इन्द्रकान्त झा (कार्यालय सचिव चेतना समिति) एहि संग्रह कें व्यवस्था लेल बहिरबन टोकारा दैत रहलाह तें हिनकहुँ प्रति अपन आभार प्रकट करैत छी। अन्त मे हुड्डा परिवारक माइनजन श्री अर्जुन ठाकुर कें धन्यवाद दैत छिऐन्हि जे मैथिली प्रकाशन दिशि अगाढ़ अनुराग देखओलन्हि अछि। आदर्श प्रेषक स्वत्वाधिकारी श्री सहदेव बाबू सेहो धन्यवादक पात्र थिकाह जे एतेक कम समय मे तत्परता पूर्वक पोथी बहार कए सकलाह।

*हरबड़ी मे जे प्रेसक त्रुटि रहि गेल अछि, तदर्थ क्षमा प्रार्थी छी।*

श्री गोपालजी झा 'गोपेश'

२५-११-६६

कार्तिक धवल त्रयोदशी

*विद्यापति स्मृति दिवस*

शकः १८८८

क्रम

## समर्पण



प्रो० श्री अनिरुद्ध झा एम० ए०
दर्शन विभाग, पटना विश्वविद्यालय

विमल कीर्ति जनिकर पसरल अछि
विद्या बुद्धि अपार
अर्पित हो अग्रजक चरण मे
अनुजक ई उपहार

—'गोपेश'

# मिथिलाक प्रतिनिधि

ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
जाहि देश केर माटि पानि मे नव जीवन छइ
जाहिठाम हँसइत अछि धरती खल खल खल, खल
जाहिठाम नयनाभिराम होइछ भइकाला
जाहिठाम शाद्वल पर चमकए मोती सन सन पाला
जाहि देश मे लहलहाइत अछि दोलडिक गम्हड़ा
जाहिठाम अगणित प्रसून पर सुबधए भम्हड़ा
जाहिठाम कमलाक धार मे कुदकए मारा पोठी
अन्नपूर्णा भरलन्हि जत कहिओ घर घर कोठी
कौशिकीक जल करइत रहइछ कलकल जतए निनाद
जाहि भूमि कें भेल न कहिओ रंचहुमात्र विषाद
जाहि देश मे प्रकृति नचइ अछि संदिखन छम छम छुन छुन
ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
जाहिठाम पाओल जाइछ वोका सन सुन्नर आँखि
फड़फड़बए लगमात्र जाहिठाँ सुरताहि सँ पाँखि
जाहि देश मे होइत अछि तरुआरि सनक भ्रू-रेख
देखए सब आशा विचार मे अवपहरा ओ सेख
अठुलक कोढ़ी सन टुहटुह जत नारी केर ठोर
मधुर बसार बहए जहँ तहँ-तहँ रम्य जाहिठाँ भोर
जाहि देश मे जपइछ सभ जय जय भोला शिवदानी

नामी जत्त बूढ़क पटुआ ओ चेलिक नखिदानी
जाहिठाँक थिक पैघ धरोहरि मिरजइ साटा पाग
कोकटिक धोती गाम-गाम मे हथिगर पटुआ साग
जाहिठाम बड़िओ होइछ ठेघा बड़ाम ओ सीक
जाहि देश मे नैहर केर कौओ लगैत अछि नीक
जाहिठाँक उल्लेख्य एवं थिक बल नमोदारी चौठीचान
छठ ओ जड़िन तोड़थि जत्त इन्द्रहुँ केर गुमान
जाहि भूमि सन सासुर नहि अछि कोनो देश ओ ठाम
आवैती सरहोजि सारि ओ सरही वलमी आम
'सत्यं शिवं सुन्दरम्' केर जे पावन संगम थीक
समा-चकेवा भातृ-भगिनी स्नेहक जतए प्रतीक
होइत छथि नेपहि सँ लुरिगरि जाहि देश केर नारि
प्रियगर लगइछ जनमानस कें जनिकर डहकन गारि
जाहि देश मे गाओल जाइछ तिरहुति ओ समदौन
जाहि देश मे नव विवाहिता करथि बहुत मनौन
बिसरथि नहि जत्त केर धीया साँझ तुसारी पूजन
वैवाहिक गीतहु जइठामक नहि जनैत अछि दूजन
जाहि देश मे अहिपन पुरहर ओ सीकीक चँगेरी
जाहि देश मे बटुओ होइछ बरफा गोट गँगेरी
जग जानित अछि जाहिठाम केर देस-कोस मे भोज
काजतिहार होइतहि रहइछ घर आङन मे रोज
जाहिठाँक इतिहास अपन अछि आर दिव्य भूगोल
जाहि देश मे सौजन्यक नहि भए सकैत अछि मोल



जाहि देश केर लोक न होइछ ककरो डरें सकदम
ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
जाहि देश मे होइछ चहटगर मुड़ी ओ पकमान
खोआ भरल पिरुकिआ अनुपम कोजागराक मखान
मोटगर छालिक दही जत्त आओर तमहा चूड़ा
अति विन्यास सँ कोड़थि गृहिणी जत्त रोहुक मूड़ा
मालभोग केर भात सुअदगर तइ पर राहड़िक दालि
कड़कड़ घी तरल तिलकोरा अछि जत्त केर चालि
जाहि देश मे विलहल आइछ खिलवट्टी मे पान
जनी सुपारी भरि-भरि चाकुट जाहिठाँक सम्मान
जाहि ठाम उजरहि समाठ बजरैतहि रहइछ धम धम
ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
जाहिठाम प्रतिभा सबहक थिक जन्म-सिद्ध अधिकार
नव्य-न्याय केर दीप जरौलनि गंगेशक अवतार
जाहि देश मे वाचस्पति ओ मंडन केर पधार
एक-एक साधक केर जइठाँ पसरल कीर्ति अपार
नीर-मुक्ति छथि गौरवशालिनि जनक जनिक हरवाह
जाहि ठाम कहिओ छलाह शास्त्रक पंडित चरवाह
जाहिठाम एखनहुँ गोगोल अछि गप्प सभक कनतोड़
जाहि देश केर मानू भा केर भेटए न कत्तहु जोड़
जाहि देश मे गाछ-टाट पर अमरवेलि लतराएल
जाहिठाम डबरहु मे सोभए कमलक फूल फुलाएल
जाहिठाम जन-जन केर मुख सँ चुबइछ अमृत सदिखन
ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम

# हम आ हमर युग

बुद्धि वर्षों लेपइत छी हमरा लोकनि
बुद्धि हमर आन्हर नहि
शरीर सँ पातर लफलक होइतहुँ
विवेक हमर नाडर नहि
ऊपर सँ बुझि पड़ी विवेक ने कखरो
स्वार्थक ज्वाला ओ कटुकालिमा
आ' छल-छद्म सँ रंजित हमर परिधान
मुदा हम छिकहुँ योग्यता ओ सामर्थ्यक धरोहरि
धर्म, समाज ओ अन्धविश्वास
रहल अछि सभ दिन सँ उपदेष्टामात्र
हृदय ओ बुद्धि
कल्पना ओ यथार्थ
सिद्धान्त ओ व्यवहार
दुहुँक दुइ घाट, दुइ बाट





हम छिकहुँ घोर बुद्धिवादी
आस्था केँ तर्कक कसौटी पर कसनिहार
अधिकार आ' कर्त्तव्यक प्रति सदिखन श्रद्धावनत
ओ स्पुतनिक युगक क्रान्तिदर्शी मानव
विघटित सभ्यताक मूल्य
आ' कुंठित आस्थाक हेतु
चेतनाक उद्घोष
आ' सम्भावनाक दिव्य-स्रोत

—: o :—

# एक व्यक्तित्व :
## दुइ चित्र

( १ )

बइसओने एक भाग अलसीशिअन कुकुर
आ' पजिअओने लाल दुइ दुइ ढोर वाली स्काटलैण्डक किशोरी कें
स्लेटी रङक तीस हजारी कार पर मोटका चुरूट धुकइत
चक्कर कटइ छथि नगरक चारू कात
कपड़ाक थोक व्यापारी श्री पकौड़ीमल कुनकुनिआँ
अरे ! के नहि जनइछन्हि हिनक नाम
चरइ छन्हि नगर भरि मे हिनके टारा बी
चलइत छन्हि हिनक चारि-चारि टा सिनेमा
आ' कतेको प्रस्तुत वस्त्र भण्डार
डीलस सँ निरले दच्छिन
फोललन्हि हें विलैं तक उतार पर हाल हि मे भव्य होटल
स्वदेश ओ परदेश समटा छन्हि रहल-खेहल
कलकत्ता, बम्बइ, पेरिस ओ स्विटजरलैण्ड
आजुक भौतिकवादी युग मे
इएह थिका ब्रह्मा, विष्णु ओ महेशक प्रतीक
आ' इएह थिका सभ्य मानव
ज्ञान-गुण गरिमा मण्डित





हिनक व्यक्तित्वक सोझाँ
नतमस्तक कोनो पण्डित
बइसओने एक भाग अलसेशिन कुकुर
आ' पजिअओने लाल दुइ दुइ ढोर वाली स्काटलैण्डक किशोरी कें
स्लेटीरंगक तीस हजारी कार पर मोटका चुरूट धुकइत
चक्कर कटइ छथि नगरक चारू कात
कपड़ाक थोक व्यापारी श्री पकौड़ीमल कुनकुनिआँ

( २ )

धन्य थिका सेवक जी
कर्ण आ' दधीचि सन जनिक आदर्श व्यक्तित्व
गांधी बाबाक जे पक्का अनुगामी
गीताक अठारहो अध्याय जनिका जीहें पर
"अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम्।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥"
लोक सेवा जनिक जीवनक पुनीत ध्येय
जनताक किलास मे जे रेल पर चढ़इत छथि
आ आगये जे सर्वोदयक राहरि दरड़इ छथि
अपार जन समूह जनिक उत्साहवर्द्धक भाषण सुनि
अगिला चुनाओ मे जितएबा लए आकुल अछि
धन्य थिका त्यागी, तपस्वी ओ मनस्वी व्यक्ति
हृदय परिवर्त्तन जनिक काल्हए सन भेल अछि
केओ बजैत इएह थीक चाणक्यक कूटनीति

केओ बजैछ इएह थीक आधुनिक राजनीति
जकरा जे भोग होइ से भागओ तुरत
ओ तँ भिका जननायक
छवि न आब बनिसा
चढ़ाओल रेशमीक बनिआनि पर खद्दरक कुर्ता
श्री पकौड़ीमल झुनझुनिआँ

—:०:—

# फ्रीलान्सर

धार सँ भिरले दच्छिन
बेस अकाए बोन छइ
आ' बिच्चहि मे स्थित छइ
शिव लिङ्गवत् प्रस्तर खण्ड

छुड़बा तारक भोंक सँ
चुबइत छइ बुन्ने बुन्न
स्फूर्तिदायक तारक रस
आ' भोग लगइ छन्हि शिवजी केँ

ग्रामोद्योगक चहटगर टॉनिक
दुरिशा पछुआ लोटइ अछि-शिलाखण्ड पर
साँभ परात
ओ रङ बिरंगक गर्द सँ

बाराक स्वागत करइत अछि
आ' चढ़बइ अछि हुनक डाली मे
अधजरुआ बीड़ीक टुकड़ी
खड्डल सलाइक काठी
कोनो निराश प्रेमीक डायरीक पन्ना
हॉलीउड तारिकाक नेल पालिसक खपी

लिपस्टिकक टुट्टू टुकड़ी
स्वतन्त्र उमेदवारक जम्मा पहिरने

भोट मे ठाड़ कोनो पार्टीक विक्षुब्ध-
कार्यकर्ताक एलेक्शन पोस्टर
आ' दुरगमनिआँ कनिआँक सोँइह नहक
टुट्टू टा टूथिधान

छुटितहि रहइछ ओतए
पिकनिकिआ कालेज छात्र छात्राकबहुरंगी दल
जेना कोनो तीर्थस्थल पर
भक्त जन जुटइत हो

खाइत अछि
पिबइत अछि
भरि पेट
भरि पोख

आ' चढ़बइ छन्हि ओहर दानी बूढ़ा कें
सैँडविच टोस्ट
ओ' मार्टन टॉफी
आ' बकर बकर बाबा तकितहि रहइत छथि

मखमल जीनक पैंण्ट
नाइलनक बुस सर्ट
रेशमी सलवार
जालीदार कुर्त्ता



हवाइ चप्पल
आगफा कैमरा
आ' थर्मस लटकओने
अशा परिणत मनुपन्तानक दुलकी चालि

बाबा फ्रीलान्सर छथि
तेँ नहि छन्हि मन्दिर
आ' नियमित रूपेँ
सइर मे' कर भोगो

नहि लगइत छन्हि
फ्रीलान्सर मात्रहिक
इएह थीक दिव्य लक्षण
फल्गू नदी जेकाँ अन्तः सलिल प्रवाह

ओ मुक्त हास-परिहास
तेँ मनुष्यक स्वच्छन्दता कें
कहल जा सकैछ जीवनक चरम उत्कर्ष
शंकरक महिमा

ऐतिहासिक गरिमा
आ' व्यापक शिवतत्त्व

---

# युग धर्म

लोक हम वनस्पति-युगक
कोनो देश
कोनो प्रान्त
उपमा नहि आनठाम
खाइत छी बिस्कुट
आ' पिबइत छी गरम चाह
कोइआ सँ नापि-नापि
लैत छी सुगन्धित तेल
ढारइ छी मगज पर लोटाक लोटा पानि
रगड़इ छी साबुन पर साबुन
बनएबा लए कान्ति
आ' पएबा लए शान्ति
मखमल जीनक पैंट पर सँ
चढ़बइ छी सनीला
पहिरइ छी हवाइ चप्पल
करइत छी लीला
नीक जेकाँ घोखने छी
फ्रायडक सिद्धान्त सार
पइसइ छी अचेतन मे निचोखि





खोलि हम चेतन द्वार
विश्लेषण करइत छी
युग-युग सँ मोतिआएल दमित इच्छाक
तृष्णाक ज्वाला मे
छार करल अन्तरक श्रद्धा
आ' घोरि लेल
गरल कठौत आडम्बर मे
अपन बहुधारि हाथक आँतरी कें

---

# हे कवि कोकिल आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

(लेखक)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
प्रयोगवादी रचना करितहुँ
अपनहि लिखितहुँ
अपनहि बुझितहुँ
रीन काढ़ि पोथी छपबवितहुँ
आलोचक केँ देखितहि भगितहुँ
दुइ चौचिआ केँ गप्प लड़बितहुँ
बात-बात मे टाङ अड़बितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

(गीतकार)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
मक्खन जीनक फुल पैंट पर





नाइलन केर बुशसर्ट चढ़बितहुँ
हवाइ चप्पल धारण कए
सोझे बम्बई केर टिकट कटबितहुँ
खूब चहटगर रसगर फिल्मी गाना लिखितहुँ
लता आर गीता केर कंठहार बनि जइतहुँ
फिल्मजगत् मे नाम कमबितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

(ठीकेदार)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
आन्हक ठिकेदार भ' जइतहुँ
अन्नक बदला गोला फोलितहुँ
नव डिजाइनक घर बना कए
सन्दुक सन रेडिओ घुघुअबितहुँ
लहना आर तगेदा करितहुँ
टका अरजि कए दुर्ज कए लितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

## (इंजीनिअर)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
कोनो ठाम इंजीनिअर रहितहुँ
बिरकी मे बिजुली-लए जइतहुँ
अहइ रउदी किछु नहि करितए
सरती समटा खेत रोपितहुँ
टेण्डर मे खूबे हथिअबितहुँ
नहिएँ कखनहुँ ढेकार करितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

## (प्रोफेसर)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
कोनो ठाम प्रोफेसर रहितहुँ
लंदन सँ पी-एच० डी० लबितहुँ
सात गोट इन्क्रिमेंट पबितहुँ
सेटर औ टेबुलेटर रहितहुँ
कतोक विषयक बोर्ड मे रहितहुँ
सिनेट सिंडिकेट मे रहितहुँ
एन० सी० सी० केर कैप्टन रहितहुँ



पोथी लए सीरम मे पढ़ितहुँ
मीन-मेष तमठाम देखबितहुँ
सम्शासनक अधिकारी बनितहुँ
प्रिन्सिपलक दरबारी रहितहुँ
सेव अनार मुनक्का खइतहुँ
एलिफैंटा औ अजन्ता जइतहुँ
जनता केर किलास मे चढ़ितहुँ
फरटक मासुल चार्ज कए लितहुँ
नोटहि सँ क्लासहुँ मे भरितहुँ
फाँकी दए चटिआ कैँ ठकितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

## (डाक्टर)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
एफ० आर० सी० एस० डाक्टर रहितहुँ
अओ सए टाका नित्य कमबितहुँ
फीस-याचना मे नहि चुकितहुँ
कुकुर जेकाँ रोगी पर भुकितहुँ
सदिखन मूह बनओने रहितहुँ
कंठलँगोट चढ़ओने रहितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

## (वकील)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
हाइकोर्ट मे प्रैक्टिस करितहुँ
नहि चलि सकितए सेहो खरचा
मुह विधुअओने मलिन हि रहितहुँ
गाउन मे चेफरी सटबितहुँ
फूलक कली कोट मे खोसितहुँ
मुअक्किलक असरा मे रहितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

## (अफसर)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
कोनो विभागक अफसर रहितहुँ
निश्चय आई० ए० एस० भए जइतहुँ
लिपिकवर्ग पर रज्ज जमबितहुँ
चश्महि तर सँ आँखि गुड़रितहुँ
कनफेरेंस, सेमिनार मे जइतहुँ
टी० ए० सँ कोठी केँ भरितहुँ



तीस हजारी कार कीनितहुँ
श्रीमती सङ चक्कर कटितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

## (नेता)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
मिरजइ टोपड़ा पाग छाड़ि
नेता केर समटा ड्रेस बनिबतहुँ
पीड़ा पानक खिल्ली खइतहुँ
सदिखन पटना दिल्ली जइतहुँ
सभ विषय पर भाषण करितहुँ
बहुतो ठाँ उद्घाटन करितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

—: ० :—

## यथार्थ

[ एक ]

हमरा घर लग रहइछ एकटा
साठि वर्ष केर वृद्धा
मुलरी सन उज्जर छइ ओकर केस
छैक डेराओन आँखि
झखड़ि गेल छइ दाँत
चोटकि गेल छइ गाल
मुदा न ककेरा बूझि पड़इ छइ
ओकर असल उमेर
नकली रङ सँ रङल समटा केस
रङल टिप्पल नह
मुँह मे लागल सुन्नर दाँतक सेट
काजर कएल आँखि
पोति नेने अछि पाउडर सँ ओ गाल
प्रेम-प्रणय सँ रहइछ सदिखन कात
उज्जर दप दप छैक छिक सिल्क केर नुआ
आओर करिआ आडी
बात बात मे छिटकबैछ बतीसी
जेना कोनो हो शुद्ध षोडशी
रूपवती सुकुमारि



## कल्पना

[ दू ]

हुनका घर लग रहइछ एकटा
बीस वर्ष केर बाला
कान्ति जकर छइ दिव्य
सेव सनक छइ गाल
डोका सन-सन आँखि
खड़ सनक भृ्रेख
दाड़िम सन-सन दाँत
ओ छिड़िआएल केस
मुदा न ककरो बूझि पड़इ छइ
ओकर असल उमेर
कॉच वयस मे
पैरल लेलक थकाए
परक थिकि गिरथाइनि
बनब ठनब नहि ओकरा छैक पसिन्न
बुढ़ि सेबों ओ बाजए गढ़ि-गढ़ि
समटा सोझल बात
पहिरए मोटका नन्गिलाउ केर साड़ी
आडिक छैक न थाट
नहि ओकरा जीवन सँ किछुओ मोह
जानि न कहन मुँह देति ओ बाति
लावण्यक अपमान
धिक ई विधिक विधान

# बिजुलिक दिमाग आ' यन्त्रक जाँत

बिजुलिक आधुनिक दिमाग सँ
होइछ गणितक कठिन सँ कठिन प्रश्नक समाधान
खेलल जाइछ शतरंजक खेल
आ' गाओल जाइछ गीत
बाँचल जाइछ धाराप्रवाह
सत्यनारायणक कथा ओ वेदमन्त्र
आ' संचालित होइछ शासनतंत्र
लन्दनक छब्बीस वर्षीय इंजिनियर
बजुपिड कम्प्युटरक निर्माण कए
फोलि देल युग युग सँ मूनल आँखि
आ' फाटि देल कल्पनाक पाँखि
अपने हम पाछाँ छी
छति हमर आगाँ अछि
सोफाँ मे लक्ष्य नहि
डेग मुदा ससरल जाइछ
देखि लिअ आधुनिक विज्ञानक उपलब्धि
आ' चपजेट मनुक्ख कें रॉकेट उड़बैत
आ' राहड़िक दालि जेकाँ यन्त्रक जाँत मे दड़रैत
नैतिकता, आस्था ओ अध्यात्म कें



# भारतक माटि सँ

धन्य भारतक माटि,
होइत छीक एते लतखुरदनि
युग-युग सँ सूतल छह तैओ
पूरेतल दऽकान
तोहर वक्ष पर टहलि रहल छहु
चंगेजक सन्तान
ढोल नगाड़ा बाजि रहल छह
तोड़ह आबहु नीन
फोलह शिवक त्रिनेत्र आ देखह
चढ़ल अबै छहु चीन
बनितहु आब न अनठओने
नहि सुनतहु केओ मधुगान
रचए रुद्र केर तांडव नर्तन
छहु देशक आह्वान
मानि लैह हे माटि

(चीनी आक्रमण काल मे रचित)

—:०:—

# सोन दाइक नव चिट्ठी

हम करइत छी नितदिन परेड
चलबइ छी बन्दुक साँझ-प्रात
देशक खातिर मरि जैब मुदा,
नहि चढ़ए देबै चीनीक लात
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

गाँधी छिकाह आदर्श महर
भगवान् बुद्ध केर कर्मकोन
नहि जाँति सकत कनफुसीआस
चीनी सबहिक अति क्षुद्र गोन
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

हल्दी घाटी केर आंगए सँ
बहइछ हिमगिरि पर नव बयार
झाँसिक रानी केर वीरताक
सुनबय गाथा गंगाक धार





से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

लछमण रेखा नहि लाँघि सकल
मद सँ प्रमत्त लंकानरेश
ई मैकमेहन थिक सैह रेख
जे पार करत भए जैत शेष
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

विस्तारवाद नहि नीति हमर
भारत सभ दिन सँ अछि उदार
"हिन्दी-चीनी भाई-भाई"
छल ढोंगमात्र चीनक प्रचार
नहि करतइ केओ परतीत ओकर
जकरा नहि कनिओँ छैक शील
महिसक आगाँ बेणुक अवाज
तहिना ओकरा लए पंचशील
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

लगलैक सेहन्ता ककरा ने
जे देखत हम्मर प्रजातंत्र
आधार जकर बन्धुत्वपूर्ण
ओ सत्य अहिंसा मूलमन्त्र
एहि स्वतंत्रता केर रक्षा लए
सर्वस्व हम कए देब दान
हाही बिरथा किछु कए न सकत
हम दाहि देब शत्रुक गुमान
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

इतिहास लिखल स्वर्णाक्षर से
होशिआर सिंह केर नाम अमर
नायक सुंशी सन वीर सँ जतए
जे आत्म-विसर्जन कएल समर
भारत देशक सैनिक बल पर
अछि हमरा सभकेँ बड़ गुमान
अनुशासन-प्रिय अछि जतए लोक
तकनहुँ नहि जोड़ा जकर आन
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।



देशक खातिर उत्सर्ग कएल
युग सँ जोगौल मटरमाला
औंठी, बाली ओ नकमुन्नी
आ' चारि भरिक कठगर बाला
थिक अल्प बचत एक अनुष्ठान
नहि अछि कए एहि सँ दान-पुरुष
जे नहि परवाहि करए देशक
से महामूर्ख थिक बुद्धि-शून्य
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

मोटर हाँकब हम सीखि लेल
थिक टाइप करब बड़ सोभकाज
मलहम-पट्टी पहिनहि सीखल
सम्हारि लेब आफिसक काज
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

अवतीर्ण भेल छथि एहिठाम
नायडू सरोजिनी सनक नारि
हुनका लौकिक आदर्श कतए
ओ पाबि सकत पेकिङ्क नारि

से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

बारह नम्बरक सलाइ अहाँ
पटना सँ किनि जे पठादेल
तैआर करल नव-नव डिजाइन
स्वेटर मौसा पलटनक लेल
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

चीनी कट केश छुछुन्नरिसन
मुह मे नहि एको रत्ती पानि
थेपल-थापल उसनल स्वरूप
नहि सुन्दरता मे कतहु मानि
भारत सौंदर्यक खान थीक
नहि पसरत एकर करत आन
कश्मीर सेब सन गाल जतए
आ मुख लगइत अछि दूर्वाघान
अड़हुलक कोढ़ी सन ठोर जतए
तइपर कखनहुँ मुस्कीक रेख
सभ दृश्य जतए नयनाभिराम



आ तरुआइरि सन भौंह-रेख
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

(चीनी आक्रमण काल मे रचित)

—: o :—

# उपलब्धि

*रातिखन—*

कतहु सँ हेको-हेकोक आवाज
कविगोष्ठी मे आएल छल
रसास्वादन जखन करल कुण्ठा-ग्रस्त प्रबुद्ध श्रोता लोकनि
—आ' कविगोष्ठीक अध्यक्ष महोदय

*भोरखन—*

लॉनक रौन्ड दैत छलाह
स्वास्थ्य-विज्ञानक गोर पारियेक बेचा
संगहि गोर दलेक छुछुन्नरि छुछुआइत छल
आ' कोनो बम्बइआ तारिकाक आगाँ-पाछाँ
आटोग्राफ लेबा लेल बेहाल छलाह
स्थानीय कालेजक एकटा प्रोफेसर

### दुपहर मे—

युनिवरसिटी लेक्चर थियेटर मध्य
आयोजित छल कोनो विचार-गोष्ठी
जकर विषय छल 'इमोशनल इन्टेग्रेशन'
जाहि मे अध्यक्षता कयल एकटा संस्कृतक पंडित
आ' उद्घाटन एकटा फिल्म निर्माता

### राति मे—

देखनि छलिअनि पंडितजी कें
टोस्टक संङ चाहक चुस्की लैत
पैदिकोजी मेटला सिनेमे मे
देखए आएल छला राजकपूरक 'सतरंगी तमाशा'
संङ मे गृहणियो छलथिन
चूड़िदार पहिरने, लिपस्टिक लगओने
आ' किदनि-किदनि पंडितजी संङे दुपरैत

—: ० :—

# मनुक्खक अस्तित्व

मनुक्खक अस्तित्व
भँवर मे जेना कोनो डेंगी नाह
आ' पिहाड़ि पाथर मे गुड़कल कोनो खोताक चिड़े
मालरि जेकाँ थर-थर-काँपैछ जकर कोँढ़
आ' अधर पर परिव्याप्त व्यथाक पातर रेख
साँसे पर टाड़ अछि
हाड़ माँसक ई शरीर
एक्के नियम सँ संचालित होइछ
गरीब ओ अमीर
जिनगी नित चढ़इत अछि चिता मसान मे
बलिक बकरा थिक सारिपहुँ मनुक्ख
उच्च आदर्श जकर निहित
आत्म-बलिदान मे
ओकर सफल इतिहास
युग युग सँ पोसल कुंठा ओ आकांक्षा
रहि रहि कए उफनाइछ
आ दर्प सँ चूर भए मनु सन्तान
सदिखन डनमनाइछ

इएह थिकैक ओकर उपलब्धि
आ' इएह ओकर धरोहरि
आ' एकरे परतापेँ ओ खेनइ अछि दिन-राति
आ चढ़बै अछि पाँतर पर निर्धोख सोनक पानि

—: ० :—

## टहाटही इजोरिआ मे—

टहाटही इजोरिआ मे—
घाटी स्पष्ट अछि
मुदा अभेद्य ओ रहस्यमय मार्ग
केवल साधके टा जनै अछि
सिन्धु ज्वारेँ धरा पर पसरइ अछि
आ हृदय भए जाइछ
अनन्त प्रसार मे छोट-छीन द्वीप
.... .... .... .... .... ....
टहाटही इजोरिआ मे
जगत् उद्भासित अछि
आ युगसन्धिक चौबट्टी पर
बटोही अछि पथने कान

—: ० :—

## शौर्य मे ककरो सँ उनैस नहि

सत्य ओ अहिंसाक पुजेगरी थिकहुँ हमरा लोकनि
मुदा तेँ शौर्य मे ककरो सँ उनैस नहि
शरीर सँ पातर लकलक होइतहुँ
आस्था हमर कुंठित नहि
मर्यादा ओ संस्कृतिक प्रतीक छेँ हम अनन्तकालहि स
तेँ नहि भेल अछि हमर विवेकक ह्रास
हमर रण-कौशल ओ पराक्रमक गाथा
ओतबए पुरान अछि
जतेक हमर देशक इतिहास
हमर मशीनगन, मोर्टर्स, राइफल्स ओ रॉकेट-प्रक्षेपक
सभ किछु उजागर अछि
आ' हमर टैंक ओ आर्टिलरीक सोझाँ
सभ किछु छागर अछि
के नहि जनैछ हमर कीर्तिशाली नैटक नाम
जकरा सोझाँ सकल प्रयास बेकाम
पैटन टैंकक गोलि छुड़कैत
जे मोर्चा पर कएल महाप्रयाण
सरिहुँ अपन वीर हमीदक खातिर

भारत कें छैक गुमान
हमर देश जागि गेल अछि
जागि गेल अछि हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख ओ ईसाइ
हमर राष्ट्रीय एकता देखि कऽ
कतर कतर ने ठोर पर फुफड़ी पड़ैछ
आ' अकिल गेल छइ हेराइ
भारतक एक-एक 'लाल'
सरिपहुँ 'बहादुर' अछि
मातृभूमिक रक्षा जकर मूलमंत्र
आ' जे कहिओ सपनहु मे नहि भए सकैछ
बिसरिओ कए परतन्त्र—

—:०:—

## जवानकेँ सम्बोधित गृहिणीक दू आखर—

परम प्रिय प्राणनाथ नम्बर एगारह सए तीस
भेटि गेल मोपलग टाका गोर बीस
रेडिओ सँ सुनने छलहुँ अहाँक सनेस
मलेटरी मे चल गेलाह बंगटू गनेस
कहाँदनि लड़ाइ बन्न भेलाक बादो
लेल गेल अछि चलडुसि कैक सेर
आ' खड़ीओ उचारि कए लाल काकी कहने छली
जे फक्षा केँ नहि लगलनि हैँ कुतोक कलेप
टुनटुनो बजए हमहू पलटन मे भरती हैब
आ' बापूए जेकाँ टैंक ओ मशीनगन लैब
तनने रहब बन्दुक सँदाएब नहि ध्यान
अमर रहत हमर सोहाग जँ चलिओ जैत अहाँक जान
माइओ दै छथि सप्पत तँ रखबनि दूधक लाज
देश रक्षा सँ बढ़ि कए दुनिआँ मे नहि दोसर काज
परसू सँ बाबी धए लेलनि अछि खाट
पुबरिआ घर छड़ाए गेल आ' लागि गेल टाट
आएल छलथिन मौसरामनी मे छोटकी दाइक बर

अनने छलथिन तीन मरिक असरफीक छड़ड़
गाए गेल बिठुलि आ' महिस बिआए
एकटा खुशीक बात जे हम सीखै छी तिआए
मोन होइए भाटा अदौड़ी खाए
मरुआक रोटी, गरचुन्नीक सागा ते सङ एकटा काँच मिरचाइ
बाड़ी मे उपजल छल मकइ दस सेर
काटि कऽ कोड़िआ सभ लऽ गेल जनेर
आङन मे कुनरइ अछि कौआ नित भोर
अहाँ भिकहुँ गुड्डी आ हम भिकहुँ डोर
कोइल स सँ आएल छल माछ दहीक भार
उतारा देब जल्दी बूझि एकरा तार
जादा इति चन्द्रकला तारीख पचीस
पावथि जवान मधुकान्त भा 'नम्मर एगारह सए तीस'

(पाकिस्तानी आक्रमण काल मे रचित ।)

—: ० :—

# प्रयोगवादी गमछा

ई थिक प्रयोगवादी गमछा
सात्त्विकक तौनी
आ' पुरुखा लोकनिक धराउ
मुदा आजुक प्रज्ञा-परिणत लोक एकरा
लपेटै अछि डाँड़ मे
आ' लपेटवा सँ पहिने
जेँ चौपेतब अभिष्ट नहि
मारिसक तेँ धोअएबा सँ पहिनहि एहिपर
इस्त्री पड़बैत अछि
हे देखि, लिअ नव लोकक नव प्रयोग
धोआ सजा कऽ
पहिरबा सँ पहिनहि
एकरा गोबरोड़ मे बोरि लेल
आ' धो-धाए कऽ पहिरबाक प्राचीन परम्परा
धूलिह मे ओंघाए गेल

—: ० :—

# हिलकोर

भारत-नेपालक सीमान्तक ग्राम मध्य
ओ कोनो दीप शिखा जेकाँ जरइत छलि
श्रम सँ क्लान्ति छलैक ओकर दुइ आँखि
आ' कोनो अज्ञात देशक अपरिचित गाथा मे
ओ बहुतो गप्प बजइत छलि
आँखि मे छलैक छाहरि
आ' गगनक नीलिमा
ओ केशक जड़ सँ हुलकी दैत भगवान भास्कर
हम ओकरा देख ने छलिअइ
लुत्ती सन दुपहरि मे
सीमान्तके ग्रामे मध्य
जाहि ठाम श्रम छैक
क्लान्ति छैक
ओ छैक सुन्दर साँझ
मुट्ठी भरि भात छैक
आ' नरल नाटी दालि
भरल आङन नाच छैक
आ' कंठ भरल गीत





हम ओकरा देखने छलिऐ'
ज्योत्सना-म्लान फागुनक राति मे
सुता कउखन कए हमरा होइछ
जे हम नहि देखलिऐक
जेना हम किच्छु देखनहि ने होइ
आ' ई सभ हमर उद्भ्रान्त कल्पनाहि।

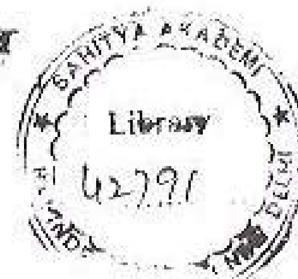
—:०:—

# जय जवान जय किसान

छुब्ध करल जननीक कोर एहि विषम काल मे लाल
त्याग तपस्या सँ गाँथल जे सह अस्तित्वक माल
आदर्शक पाओँ बलिदानी व्यापक जे व्यक्तित्व
"ताशकन्द" केर उपलब्धि थिक जनिक अमर कृतित्व
संकल्पक कुबेर जे मानव भारत माँ केर पूत
हिमगिरि सन गम्भीर छला जे तदपिहुँ शान्तिक दूत
गौतम, गाँधी आर जवाहर केर जे रखलनि टेक
कएल उजागर धरती अपन मित्र बनौल अनेक
ताहि "बहादुर" मानव कें अर्पित अछि श्रद्धा-फूल
नहि बिगाड़ि सकलनि जनिकर किछु मदवा ओ दिकशूल
"जय जवान" ओ "जय किसान" केर स्वर पसरल सभ ठाम
लिखल रहत सोनक आखर मे शास्त्रीजी केर नाम
लोकतंत्र केर रक्षा खातिर बिसरलाह नहि नीति
परम्परा केर अनुगामी भारत केर अमर विभूति
एकताक सन्देश अमर देए स्वयं गेला सुरधाम
"लाल बहादुर" अमर भए गेला, विश्व करए गुणगान



# युगबोध




जीवक अछि
जीवि लिअ
जीवन रस पीबि लिअ
तीत लागए
मीठ लागए
कहुना कऽ
घोँटि लिअ

जकरा जे मोन होइ
करए दिअउ
कहए दिअउ
ग्रासन तँ
दूरि जैब
बिरड़ो बसात मे
रस्ते सँ घूरि जैब

बुद्धि चढ़ल रॉकेट पर
भावना पछुआएल
नीति ओ अनीति मध्य
क्रिया भोतिआएल

ओर नहि छोर नहि
सब किछु निपत्ता
ससरल जाइछ डेग मुदा
झोंकाँ मे खत्ता

नान्हि टा जिनगीक
इएह थीक लघुकथा
भावनाक पृष्ठ पर
अंकित अन्तर्व्यथा

झरइत अछि मील केर
बम्मा अनबोल
बिजुलिक इजोत मे
चकमक अछि टोल

पंखाक हवा मे
सेराए गेल चाह
विचारक प्रवाह मे
मौन दुखिताह

बदलि गेल युग
मुदा पुरनके अछि तान
मिलौठने छथि पबिआर
भरि मूह पान

कोइलाक सभ्यता मे
नवल धवल वस्त्र



सूत्र वाक्य वाचाक
कहुना लए अस्त्र

युग अछि प्रयोगक
विज्ञानक सम्वाद
नव मान्यताक संग
बदल मनक प्यास

कोन थीक टलहा
ओ कोन थीक सोन
युग सन्धिक चौबट्टी पर
टकुआएल मोन

अतृप्त आकांक्षा
ओ कुंठाक राज
भौतिक उपलब्धि थीक
जीवन केर साज

पछुआ बसात मे
मोन भेल चोर
मथि गेल गर्द सँ
आँखि कान ठोर

गुनैत रहू धुनैत रहू
पूर्वक इतिहास
आधुनिक सभ्यता सँ
ठेकल अकास

अनट विनट किन्तु नहि
मात्र दृष्टि-दोष
युगक सङ बदलि गेल
अर्थ शब्दकोष

जीवक अछि
जीबि लिअ
जीवन रस पीबि लिअ
तीत लागए
मीठ लागए
कहुना कऽ
घोंटि लिअऽ

जकरा जे मोन होइ
कहए दिअ
करए दिअउ
बाजब तँ
दूरि जैब
विरड़ो बसात मे
रस्ते सँ घूरि जैब

बुद्धि चढ़ल रॉकेट पर
भावना पछुआएल
नीति ओ अनीति मध्य



क्रिया मौतिआएल
ओर नहि छोर नहि
सब किछु निपत्ता
ससरल जाइछ डेग मुदा
सोझाँ मे खत्ता

—: ० :—

# बारह वर्षक बाद सासुर यात्रा

बारह वर्षक बाद पुनः हम गेल छलहुँ कैलाश
नव धरातल नव क्षितिज मे देखल नव प्रकाश
बहइत छल उनटा बसात चहुँदिशि बेहाल छल लोक
एकोगोट नहि साभी आश्रम हर्ष, विषाद न शोक
चिन्ता सँ पीअर कपेस भए गेल छलाह ससुर
मुह बिधुआओने सासु छली चद्दुआ पर तुमइत रुइ
सरहोजिक मुट्ठी मे चान्हल देखल सारक टीक
अकबक किछु नहि बुझलन्हि हुनका घोटने जाइथ पीक
'महुआ' टेल्ह भेल सरपेटा अहरी तीनू, नाइ
'नूनू' 'बीनू' आओर 'नीलू' देखितहि गेल पड़ाइ
भेल लोटइ छल दरबज्जा पर कोबरा घर ओहीन
सासिक केर आडन सँ पच्छिम सारक घर छल भीन
नया जमाना नया लोक केर चिक्कन-चुनमुन गात
छिटफाँवेत बतीसी देखल बिनु पेनिक सब बात
आवेसी सरहोजि न करहु आर न भेटलि सारि
'हलो माइडिअर' 'ओ० के० मिस्टर' नवका युग केर गारि
उनटापक्षा करने देखल रखने किल्ली चूल
कार्डिगन ओ शॉल बुनइ छलि 'लंग' 'अरांची' 'फूल'





मेक-अप सँ एहन सन कम जे शूटिंग लए तैआर
कोरो गनि-गनि दुलहा लोकनि ठोकथु अपन कपार
अच्छल घाट खाइछ जेँ कीड़ा कहुना नहि परकार
सासुक उपर छोड़इत देखल पुतहु के फुफकार
छाल्ही चूड़ा भेल अलोपित मात्र टोस्ट ओ चाह
बिनु बजने सेहो नहि भेटत भुखले रहब निबाह
श्याम गुड्डु पुरना जमाए, नवका टटाबु दिन राति
अनट बिनट जेँ किछुओ बजता सएदो करता लात
भए गेल घर सभक अवमूल्यन डेग-डेग पर दाओ
एहि महगी मे घटल जाइत अछि आपकता केर भाओ

—: o :—

# गुम्म भेल ठाढ़ छी

वसन्त

गुम्म भेल ठाढ़ छी
मकरमपुरक चौबट्टी पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

पढ़ुआ सभ जाइत अछि
हेँज बान्हि चटिआ
आ' गुड़गुड़ाइ सकुटी सँ
आएल फटफटिआ

ताहि पर सवार छथि
नव वर-कनियाँ
गुड़लड़ी घोड़ी पर
चढ़ल अछि बनिआँ

पीत-वसना कनियाँक
जालीदार दोपट्टा
झूमि रहल पतझड़ मे
सगर परोपट्टा





साबिक मे जनीजातक
एक मुट्ठी खोपा
आब तँ डेंगे डेंग
तपोवनी खोपा

साबिक मे लोक पहिरए
मिरजइ ओ' चपकन
आधुनिक लोक के 'ड्रेन पाइप' 'टी शर्ट'
बुढ़ि गाएक घंटी सन 'ट्रांजिस्टर' लटकन

गुम्म भेल ठाढ़ छी
मकरमपुरक चौबट्टी पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

ग्रीष्म

गुम्म भेल ठाढ़ छी
निरसाइरक पाकड़ितर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

लुत्ती सन दुपहरि मे
मोन अछि घोर
भवि गेल नदें सँ

आनिक मोल करैल
फीनइ छथि फँसा
ककरो नहि अबइत छै
नरिसाइतक लीसा

डलडाक सोहारीमे
देह ठेढ़ चकुला
बिज्जू ओ कलमी मे
लथपथ अछि टिकुला
कलजुगही कनटिरवी
करैए अकहड़
कोइली सँ पूछइ छइ
'हमर बिआर कोमहर'

टेक मे लागि गेल
मकड़ाक जाला
ठन ठन अछि सन्तूक
आ लटकल आछ ताला
गुम्म भेल ठाढ़ छी
निरसाइरक पाकड़ितर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

—: ० :—



## वर्षा

गुम्म भेल ठाढ़ छी
महेन्द्रघाटक जट्टी पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

भीजि गेलनि मौलिक
सज्जल तिन पढ़िआ
भीड़ मे पचकि गेलनि
मागीक अढ़ि था

टिकस शाबूक जुता मे
सन्हिआएल बैग
परहू तँ गाड़ी नहि
जाइत अछि 'ढेंग'

खसि पड़ला घूटर भा
पाञ्जौं दू कौड़ी
आहिरे बा भीजिगेल
तीसी अदौड़ी

गुम्म भेल ठाढ़ छी
महेन्द्रू घाटक जट्टी पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

—: ० :—

## शरद

गुम भेल ठाढ़ छी
मेहथू फाटक छहर पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

डुडा पिपरक फोंक मे
देखलक अछि नीलकंठ
कोइलाक सभ्यता मे
चारू कात लंठे लंठ

मुकुन बाबू दोकान मे
भेटैत नहि रैंची
रुचिगर लगैत अछि
डोबहीक गैंची

परसू तँ एहितास
लागत बेसाह
तुरू पर झंझारपुर मे
पावरोटी चाह

गुम्म भेल ठाढ़ छी
मेहथूफाटक छहर पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा



## हेमन्त

गुम्म भेल ठाढ़ छी
लोहना रोड टीसन पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

मोटरी सम्हराइ छथि
बुरहा ओ बुरही
मोसाफिरखाना मे
छिड़िआएल अछि मुरही

आँजुरक आँजुर
दोलडीक धान
बहिकिरनी हम्मर
गिलोटने अछि पान

बिसरि गेल घियापुता
"साते ओ भवटू"
सभो आब पौत्र केँ
सिखबइ छथि "वन-टू"

प्लास्टिकक फूल थीक
टेबुल केर शान
बदलि गेल रागरङ
बदलि गेल तान

गुम्म भेल ठाढ़ छी
लोहना रोड टीसन पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

801

...DUE

गुम्म भेल ठाढ़ छी
लाल मौजिक मुहथरिलग
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

गुड़-चूड़ा मिचराकऽ
फाँकइ छथि सरपच
बगड़ा सन खेता मे
गुटकल अछि संचनंच

बाबा केँ होइतछनि
एक सलगाक जाड़
बाबीकेँ धेलकनि
मलेरिआ धोखार

चील सन बात बाजए
पाव भरिक जीत
आहि रे बा गुमसरिगेल
कोबीक सुलीत

बुढ़िआक फूसि धीक
मौजिक नोर
भैआ केँ मनचैत
भड़ोलनि नोर

गुम्म भेल ठाढ़ छी
लाल मौजिक मुहथरि लग
चुनबइ छी तमाकू
आ देखइ छी तमाशा